आज का पुरुषार्थ 17 Sept 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज से हम प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स फैलायेंगे .. प्रकृति से दोस्ती करेंगे .. इस तरह प्रकृतिजीत बनने का पुरुषार्थ करेंगे "*

हम मास्टर सर्वशक्तिमान है। क्योंकि सर्वशक्तिमान के संतान है। और उसने हमारे सिर पर हाथ रखकर हमें अपनी शक्तियाँ भी प्रदान कर दी है।

हम realise करे, स्वीकार करे, हम इस संसार में बहुत बहुत **शक्तिशाली** है। इस feeling में रहे →

" मैं सर्व शक्तियों के मालिक हूँ .. स्वराज्यधिकारी हूँ .. इन शक्तियों पर मेरा अधिकार है "

चाहे सहनशक्ति हो, निर्णय शक्ति हो, विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति हो, या एकाग्रता की शक्ति हो .. इन सब पर हमारा अधिकार है।

हम इन्हें आदेश दे सकते है .. इस सत्य को सभी डीप रियेलाइज करे। हम बहुत महान है .. रियेलाइज करे। और फिर इन शक्तियों का प्रयोग करे।

हम इन शक्तियों को कही भेज भी सकते है। चाहे कोई साकार स्वरुप में हो हमारे अंदर। हम उसे कहे .. "***जाओ और यह काम करके आओ***"

किसी मे सहनशक्ति नहीं है, हम आदेश दे दे अपने सहनशक्ति को .. " जाओ उसको मदद करो .. उसकी शक्ति को बढ़ाओ "

कोई मन से बहुत निर्वल है, will-power बिल्कुल नहीं है। हम अपने शक्तियों को आदेश दे दे .. "***जाओ उसके will-power को बढ़ाओ***"

लेकिन यह तब ही सम्भव होगा जब लम्बा काल हम मास्टर सर्वशक्तिमान के नशे में रहेंगे। इसका दुसरा अर्थ भी है के ..

" सर्वशक्तियों के हम मास्टर है .. हम मालिक है .. वह हमारी है "

साथ में .. " **हम प्रकृति के भी मालिक है** "

बहुत बड़ी बात है, जहाँ सारा संसार कहता है **भगवान** इस प्रकृति का मालिक है। और यह सत्य भी है।

लेकिन हम महान आत्मायें भी **प्रकृति के मालिक है।** हमारा बाप जिसका मालिक, हम भी उसके मालिक है।

इस सत्य को भी हम उतना ही deeply स्वीकार कर ले। प्रकृति ने हमें मदद की है। हम उसके गुलाम बन गये थे। वह हमारी **मालिक** बन गई थी।

अब दो युग तक बाबा हमे **प्रकृति का मालिक** बना रहे है। तो प्रकृति की हम **सेवा** भी करेंगे। और प्रकृति को अपने अधीन करेंगे। और प्रकृति को अधीन करने का पहला तरीका है →

" हम देहभान से न्यारे अशरीरी हो जाये .. सेकण्ड में अशरीरी होने वाली आत्मा .. मानो इस देह रूपी प्रकृति के मालिक है .. यह देह हमें बांध नहीं रहे है .. अपने अधीन नहीं कर रहे है "

दुसरा स्वरुप ..

" इस देह रूपी प्रकृति के आकर्षण से हम परे हो जाये .. देह के आकर्षण समाप्त .. न अपने देह का और न दुसरों के देह का .. यह हमारी प्रकृति पर विजय है "

तो हम सभी इस स्वरुप को बढ़ाते चले। शक्तियों के भी हम मालिक है और प्रकृति के भी हम मालिक है। दोनों बहुत बड़ी उपलब्धियाँ है।

जो यह महान स्थिति प्राप्त करेंगे वह इस संसार में **पूजनीय** होंगे। और आने वाले समय में वह इस प्रकृति को order भी दे सकेंगे। **प्रकृति को शान्त भी कर सकेंगे।**

क्योंकि जब प्रकृति बहुत बहुत तुफान लायेगी, जब ऐसा लगेगा शायद प्रकृति सबकुछ नष्ट कर डाले ..

तब कुछ महान योगियों को कुछ समय के लिए उसे शान्त भी करना होगा। तो जो प्रकृति के मालिक बन जायेंगे प्रकृति धन-धान से भरपूर करेगी।

तो आज से हम सभी इस नशे में रहेंगे →

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. इस सम्पूर्ण प्रकृति का मालिक हूँ "

क्योंकि प्रकृति से ही हमें सबकुछ मिलता है। तो प्रकृति के साधनों को प्राप्त करना सहज और स्वतः हो जायेगा।

यह अभ्यास करते हुए हम प्रकृति को पवित्र vibrations भी देंगे। और

उसकी विधि →

" मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ .. प्रकृति का मालिक हूँ .. बाबा से पवित्र किरणें मुझे आ रही है और मुझसे चारों ओर फैल रही है .. प्रकृति में समा रही है "

प्रकृति की ऐसी **सेवा** करने से प्रकृति बहुत लम्बे काल तक हमारी सेवा करती रहेगी।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org